Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 011 Issue 11 NOVEMBER 2025 Pages 12 A.S. Rs 100

Guruhari Pappaji Maharaj's 110th Pragatya Din celebration

Shashvat Sankalp Parva

Bhajan Sandhya at Danti

सत्संग समाचार

❊ शनिवार, दि. १ और रविवार, दि. २ नवंबर को गुणातीत ज्योत, विद्यानगर में गुरुहरि पप्पाजी महाराज का ११०वाँ प्रागट्यदिन 'शाश्वत संकल्प पर्व' और प.पू. हंसादीदी का ९०वाँ प्रागट्यदिन 'प्रेरणा पियुष पर्व' के रुप में संतभगवंत साहेबजी और अनुपम मिशन के अन्य संतभाईयों, पवई के प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और संतभाईयों, प.पू. माधुरीबहन और संतबहनों तथा कई हरिभक्तों की हाजरी में भक्तिभाव से मनाया गया।

कई हरिभक्तोंने पप्पाजी का अद्भुत माहात्म्यदर्शन कराया और हंसादीदी के कई गुणों को प्रसंगो द्वारा बताया। दोनों दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी सभीको लाभ मिला। पवई मंदिर की ओर से पप्पाजी को विशिष्ट हार अर्पण हुआ और हंसादीदी को प्रशस्ति पत्र तथा स्मृतिभेट अर्पण हुई। प्रशस्ति पत्र का पठन हेमंतभाई मर्चन्टने किया।

दोनों समैया में भरतभाई और वशीभाईने माहात्म्यदर्शन कराते हुए बहुत अच्छी बातें की। साहेबजी के विशिष्ट आशीर्वाद भी सभीको प्राप्त हुए।

Guruhari Pappaji's 110th Pragatya Din celebration at Vallabh Vidhyanagar

P.P. Hansadidi's 90th Pragatya Din celebration at Vallabh Vidhyanagar

Guruhari Pappaji Maharaj 110th and P.P. Hansadidi's 90th Pragatya Din celebration at Gunatit Jyot

❊ बुधवार, दि. ५ नवंबर अनुपम मिशन संचालित खारघर मंदिर में प.पू. अश्विनभाई की निश्रा में विशिष्ट अन्नकूट का आयोजन किया गया था। पवई मंदिर की ओर से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई और अन्य संतभाईयों, संतबहनों और कई हरिभक्तों इस उत्सव में शामिल हुए।

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 2 14-01-2026 23:09:15

Annakut celerbation at Kharghar

❊ गुरुवार, दि. ६ नवंबर 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई और अन्य संतभाईयों, संतबहनों और कईं हरिभक्तों की हाजरी में शाकोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। पू. मीनाबहन और अन्य संतबहनों, युवकों-युवतीओं तथा भाभीओंने कलात्मक तरीके से अलग-अलग सब्जीओं को सजाकर ठाकोरजी के समक्ष रखा था।

Shakotsav at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 3 14-01-2026 23:09:15

Shakotsav at "Akshardham" Temple, Powai

❊ शुक्रवार, दि. ७ नवंबर की भजन संध्या उभराट नजदिक दांती में गुरुहरि काकाजी की स्मृति में हरिधाम के पू. सुबोधस्वामीजी, पू. सहजस्वामीजी, पू. स्वामीस्वरुपस्वामीजी, पू. भक्तिसौरभस्वामीजी और अन्य संतों तथा प.पू. सौजन्यबहन और संतबहनों की निश्रा में भक्तिभाव से मनाई गई।

मंच की सजावट प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजीने दिये गये मुख्य पाँच सूत्र (१) भूल जाना (२) छोड देना (३) सहन करना (४) झूक जाना (५) पिघल जाना... को ध्यान में रखकर की गई थी।

पू. सुबोधस्वामीजी ने कहा कि कुछ दिन पहले मुझे प्रेमस्वामीजीने रुम में बुलाया। उन्होंने पूछा कि दांती में कीर्तन आराधना होने जा रही है तो सब व्यवस्था अच्छे से हो गई है? फिर उन्होंने कहा कि आत्मीयता की गंगोत्री तारदेव से शुरु हुई। उनके कहने का भावार्थ यह था कि इतनी बडी सेवा हमें मिली है तो बहुत अच्छी तरह से सभी राजी हो जाये ऐसा आयोजन करना। दांती के भक्तों की भक्ति कैसी होगी कि पवई के संतभाईयोंने इस स्थान में भजन संध्या करने का निर्णय लिया। इस विस्तार के हरिभक्तोंने कोठारीस्वामीजी और प्रेमस्वरुपस्वामीजी को बहुत सहकार दिया है। दांती जैसे छोटे गांव में मंदिर खडा

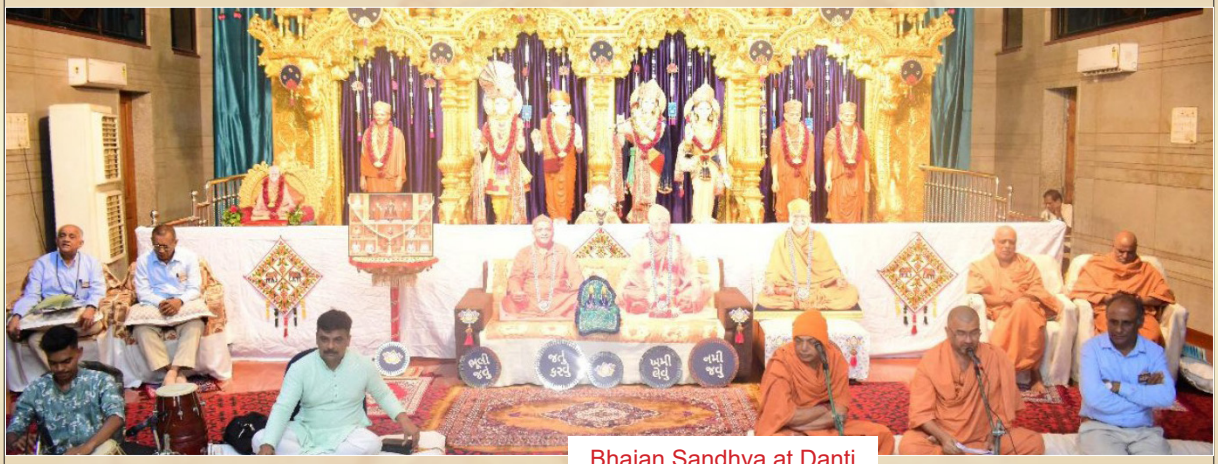

Bhajan Sandhya at Danti

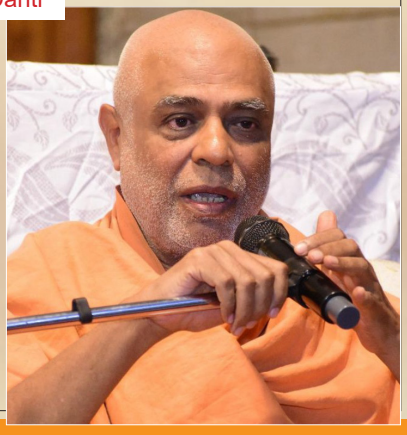

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 4 14-01-2026 23:09:16

करना बहुत बडी बात है। मंदिर का महंत मंदिर में कितने हरिभक्तों आयेंगे वो नहीं सोचते लेकिन उसके निभाव के लिये हरिभम्तों की आर्थिक परिस्थिति के बारे में ज्यादा ख्याल रखते है। काकाजी-पप्पाजी-स्वामीजी जैसे गुणातीत स्वरुपों से ये धरती पावन तो हुई ही है लेकिन आज जो प्रगट गुणातीत स्वरुप हमें मिले है उनसे अधिक पवित्र हुई है। सत्पुरुष पृथ्वी पर से कभी जाते ही नहीं है, वह बात पवई के संतभाईयोंने सच करके दिखाई है। गुरुहरि काकाजी महाराज के स्वधाम जाने के बाद तारदेव के साथ पवई मंदिर का कार्य आगे बढाना बह बहुत बडी बात है। तो हरिप्रसादस्वामीजी और प्रेमस्वरुपस्वामीजी की मर्जी के मुताबिक हम गुरुमुखी जीवन जी सके वही प्रार्थना।

Bhajan Sandhya at Danti

पू. भरतभाई ने कहा कि स्वामिनारायण भगवान को भजनों बहुत प्रिय है। एकबार प्रेमानंदस्वामीजी संतनिवास में रात को उठकर भजन गा रहे थे। तो श्रीजी महाराज उठ गये और संतों को देखने के लिये भेजा कि कौन भजन गा रहा है? संतोंने देखा और बताया कि ऐसे कोई संत भजन गा रहे है। तो महाराज स्वयं संतनिवास में पहुँचे और प्रेमानंदस्वामीजीने सुबह तक भजन गाया तब तक महाराज वही खडे रहे। फिर जब प्रेमानंदस्वामीजीने आंखे खोली और महाराज को वहाँ खडा देखकर आश्चर्यचकित हो गये। वैसे जभी भजन संध्या हो तब हमें ज्यादा से ज्यादा भजनों की स्मृति में डूबना चाहिए। गुरुहरि काकाजी महाराज सभा में जो भी हरिभक्तों आते थे उनके पास भजनों गवाते और अंत में भजनों की अंतिम कडी भी गाते थे। उससे हमें बहुत भजन मुखपाठ हो गये। गुणातीतानंदस्वामीजीने भी उनकी बात में कहा है कि भजन करते करते क्रिया करनी, तो अंतर

Bhajan Sandhya at Danti

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 5 14-01-2026 23:09:17

में शांति रहेगी। वह देखकर बडेपुरुष राजी होते है। बडे पुरुष राजी होते है तो सारे काम सिद्ध होते है। आज हमें एक संकल्प करना है कि पूरे दिन में हमें ११ बार स्वामिनारायण मंत्र का स्मरण करके और बोलके हमारा कार्य करना है। उससे अंतर में शांति होगी और वह देखकर बडेपुरुष राजी होंगे। तो प्रभु के साथ हमारा संबंध ज्यादा बढाये वही प्रार्थना।

Bhajan Sandhya at Danti

पवई की ओर से दांती के पू. रणछोडभाई और अन्य कार्यकर्ताओं को ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी और प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी की मूर्ति स्मृतिभेट के रुप में दी।

उसके बाद प.भ. अनिलभाईने संतों और संतभाईयों को शाल तथा स्मृतिभेट देकर अभिवादन किया।

पवई की ओर से माननीय सरपंचजी श्री. पूर्वेशभाई का भी अभिवादन हुआ।

दूसरे दिन सुबह संतभाईयों, संतबहनों तथा सभी हरिभक्तोंने उभराट तीर्थस्थान की मुलाकात ली। जहाँ काकाजी-पप्पाजी-स्वामीजी, साहेबजी जैसे गुणातीत स्वरुपोंने कई शिबिर का आयोजन किया था और सभीको अद्‌भुत स्मृति दी थी। वे सभी तीर्थस्थानों पर जाकर सभीने स्मृतियाँ ताजी की। भरतभाई और

VIsited Prasadi places at Ubhrat

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 6 14-01-2026 23:09:17

गिरीशभाईने भी काकाजी की स्मृति कर सुंदर प्रसंगो बताये और दांती के प.भ. जिग्नेशभाई वहाँ जो मंदिर तैयार हुआ है उसके बारें में सभीके समर्पण और सेवाभावना की सुंदर बातें बताई।

❊ शनिवार, दि. ८ नवंबर को गुणातीत ज्योत के पू.डॉ. वीणाबहन और अन्य संतबहनों 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। उन्होंने मंदिर के नये Project की खास जानकारी ली और सभीके साथ कथावार्ता भी की।

P.Dr. Veenaben at "Akshardham" Temple, Powai

❊ बुधवार, दि. १२ नवंबर को देर रात प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी और पू. आनंदस्वरुपस्वामीजी, पू. आनंदविहारीस्वामीजी तथा अन्य संतों 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। सभी संतभाईयोंने उनका तथा सभी संतों तथा हरिभक्तों का भावपूर्वक स्वागत किया। प.भ.डॉ. फाल्गुनीबहन शाह द्वारा लिखी गई पुस्तक From Gaslighting to Truthlighting का भी उनके करकमलों द्वारा सभी संतभाईयों के साथ विमोचन किया। उन्होंने रात को विश्राम भी पवई मंदिर में ही किया। दूसरे दिन सुबह ठाकोरजी के दर्शन करके करीब ९ बजे मुंबई में अन्य विचरण में पधारे।

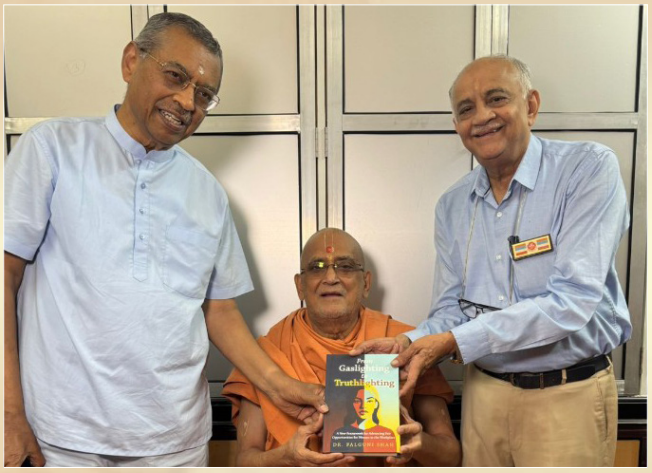

P.P. Premswaroopswamiji at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 7 14-01-2026 23:09:18

At Delhi

❊ शनिवार, दि. १५ नवंबर को प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई, प.भ.डॉ. महेन्द्रभाई मर्चन्ट, प.भ. मितेशभाई, पू. हर्षितभाई लाड प.पू. गुरुजी की सेहत देखने खास दिल्ली गये थे। योगानुयोग उसी दिन अनुपम मिशन, मोगरी से सद्गुरु प.पू. अश्विनभाई भी गुरुजी की सेहत देखने दिल्ली पधारे थे। सभीको मिलकर गुरुजी राजी हुए। सभी संतभाईयों प.पू. आनंदीदीदी तथा संतबहनों को भी मिले।

At P.B. Chetnaben Avlani's School at Dombivali

❊ मंगलवार, दि. २५ नवंबर को प.पू. भरतभाई, पू. अश्विनभाई और पू. माधुरीबहन और संतबहनें डोंबिवली में प.भ. चेतनाबहन अवलानी की छोटे बच्चों की स्कूल में गये थे और सभी बच्चों को आशीर्वाद दिये। चेतनाबहनने सभीका भावपूर्वक स्वागत किया।

❊ गुरुवार, दि. २७ नवंबर को सुबह 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में प.पू. कांतिकाका के ४०वे स्मृतिदिन निमित्त विशिष्ट पूजन विधि उनके समाधिस्थान पवई के संतभाईयों, संतबहनों और स्थानिक हरिभक्तों की हाजरी में हुई। प.पू. वशीभाईने कांतिकाका को याद करते हुए विशिष्ट प्रार्थना और संकल्प किया।

Poojan at .P. Kantiaka's Smathi Sthan at "Akshardahm" Temple, Powai

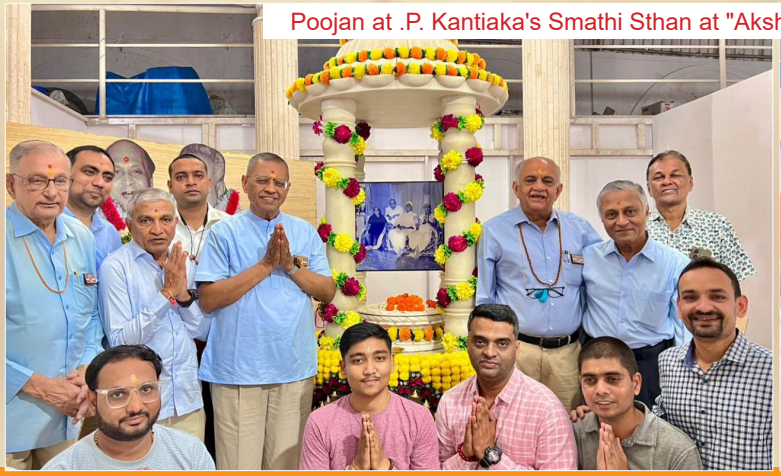

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 8 14-01-2026 23:09:18

*** शनिवार, दि. २९ नवंबर को प.पू. अश्विनभाई का अमृत महोत्सव पवई के सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा कई हरिभक्तों एवं हरिधाम के प.पू. आनंदस्वरुपस्वामीजी और अन्य संतों की उपस्थिति में आनंदपूर्वक 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में मनाया गया।**

P. Ashwinbhai's 75th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में शिकागो से प.भ. वंदनभाई, प.भ. दर्शनभाई, पवई से प.भ. हेमंतभाई मर्चन्ट, प.भ. गिरीशभाई, प.भ. ओ.पी. अग्रवालजीने अश्विनभाई के विशिष्ट गुणों का दर्शन कराया।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि अश्विनभाई सत्संग में नींव की ईंट की तरह है। सेवक निर्दोषबुद्धिवाला होना चाहिए। उसके अंदर दास के दास का भाव सबसे ज्यादा होना चाहिए। काकाजी-पप्पाजी-स्वामीजी-साहेबजी का विशेष राजीपा अश्विनभाई को प्राप्त हुआ है। वे देह को बिलकुल भी नहीं गिन्नते। प्रसंग पर दिव्यभाव रखना मुश्किल होता है। फिर भी अश्विनभाईने अपने जीवन में सामनेवाला जो बोले वही सही वही बात रखी है। गुणातीत स्वरुपों की हाश अश्विनभाई को सहज ही मिली है। आज यहाँ से हमें यहीं बात लेकर जानी है कि हमें अश्विनभाई के जैसी साधुता लानी है। हमारा मूल अज्ञान और अविद्या यही है कि हम खुदको सही और बडा मानते है। गुणातीत संत की आज्ञा से जीवन जीयेंगे तो वो मूल अज्ञान टल जायेगा। अश्विनभाईने ७५ साल तक अपना सबकुछ सेवा में अर्पण कर दिया। साधुता के मार्ग पर हम आगे बढे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि जीवनभर अश्विनभाई साधुतापूर्वक जीवन जीये। उनकी जितनी प्रशंसा करें उतनी कम है। शून्य बनकर हरेक के पास दास का दास बनकर सेवा की। उनके हृदय में निर्दोषता अद्भुत है। वे हररोज एक बचनामृत और शिक्षापत्री के श्लोक जरुर से पढते है। प्रगट स्वरुपों को उन्होंने बहुत राजी किया है। हरकोई उनपर अधिकार कर सकता है। उनकी निर्दोषबुद्धि की पराकाष्टा यही है कि वे घनश्यामभाई अमीन को अपने बोस मानते है।

P. Ashwinbhai's 75th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 9 14-01-2026 23:09:19

सबसे बडी सेवा निर्दोषबुद्धि रखनी वही होती है जो अश्विनभाई के जीवन में सहज दिखती है। हरेक के लिये उनका भाव एकसमान ही होता है। कांतिकाका को राजी करना सरल नहीं होता, लेकिन उनका भी राजीपा उन्हें सहज ही प्राप्त हो गया। निष्कपटभाव का संबंध हर किसीके साथ उनका रहा है। तो उनका स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहे और उनके जैसा दिव्यभाव हमें भी दृढ हो वही प्रार्थना।

पू. आनंदस्वरुपस्वामीजी ने कहा कि सन् १९८२-८३ में मैं अश्विनभाई को पहलीबार मिला था। उनका सबसे बडा गुण यानि सरलता। साधनामार्ग में सबसे बडी विशेषता सरलता की ही होती है। कोठारीस्वामीजी का जैसा जीवन ही अश्विनभाई का दिखाई पडता है। प्रभु की प्रसन्नता उनको प्राप्त हुई है। उनका जीवन हमारे लिये आदर्श समान है। गुणातीत संत के साथ हरिभक्तों की भी प्रसन्नता उन्होंने प्राप्त की है। तो उनके जैसे दिव्य गुण हमारे जीवन में दृढ हो वही प्रार्थना।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि अश्विनभाई बहुत पुराने **Steady Batsman** जैसे है। उनका वजन भी ज्यादा नहीं और कम भी नहीं होता। इसलिये आज ७५ साल की उम्र में भी वे युवान के जैसे सेवा करते है। वे कांतिकाका की अनीर ट्रान्सपोर्ट कंपनी में कईं सालों से कार्य कर रहे है। वे देश के किसी भी कोने से देर रात का उनका काम करते है। गुरुहरि काकाजी को कहीं भी जाना होता तो वे अश्विनभाई को साथ लेकर जाते थे। इतनी बडी Transport कंपनी में बडी पदवी पर होने के बावजुद विनम्र होकर दासभाव से सभी की सेवा करते है। तो अश्विनभाई की सेहत अच्छी रहे वही प्रार्थना।

P. Ashwinbhai's 75th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai

पवई तथा दिल्ली मंदिर की ओर से अश्विनभाई को विशिष्ट हार अर्पण हुए।

अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग भी हुई।

इसी अवसर पर शिक्षापत्री के १ से ३० श्लोक जिन-जिन बच्चोंने मुखपाठ किये उन्हें विशिष्ट Badge दिया गया।

उसी दिन पवई के वडील संतभाई प.पू. राजुभाई ठक्कर का ७८वाँ प्रागट्यदिन भी था। उसी निमित्त सभीने उनके पास जाकर उनकी अच्छी सेहत के लिये संकल्प और प्रार्थना की।

दि. २ दिसंबर को संभाजी नगर में भी अश्विनभाई का ७५वाँ प्रागट्यदिन उत्साहपूर्वक मनाया गया।

P. Ashwinbhai's 75th Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 10 14-01-2026 23:09:26

રવિવાર, તા. ૨-૧૧-૨૦૨૫

પરમ પૂજ્ય હંસાદીદીના પ્રેરણા પિયુષપર્વે...

આ ધરતીનાં આજથી ૯૦ વર્ષ પૂર્વે,
આવ્યાં આ ધરા પર, કરવા નિજ પ્રાગટ્યનો ધન્ય અવસર,
આ અવનિ પર વિચરી રહેલ,
માનવ તનમાં સાક્ષાત્ પ્રભુ રાખેલ,
એ યોગીજી મહારાજને, જેમણે જોયા અને પિછાણ્યા,
વળી પોતાના માનવ તનમાં પણ,
અખંડ ધાર્યા અને ઓળખાવ્યા,
કેવળ યોગીજીના જ થઈને જેઓ જીવ્યા અને સહુને જીવાડ્યા,
એ પરમ દિવ્ય વિભૂતિ ગુરુહરિ પપ્પાજીના
દિવ્ય જીવનકાર્યને સાકાર કરવા અને કરાવવા,
એને આગળ ધપાવવા અને શાશ્વત રાખવા અને રખાવવા,
આવ્યાં પ્રભુએ પસંદ કરેલ,
જેઓ કરી શકે નિજ જીવનથી અશક્ય કાર્યને સહેલ,
એવા મહા અક્ષરમુક્તને મોકલવા,
લાગ્યું પ્રભુને આવ્યો છે સમય હવે,
મોકલ્યાં અવનિ પર, નામ ધારણ કર્યું,
'હંસાબહેન ભગવતરાય દવે !'

નામ પ્રમાણે જ ગુણ જન્મજાત,
શુભ્ર ધવલ દેહ અને આતમ, સ્વચ્છ, સુંદર, નિર્મળ,
પવિત્રતા અને ચારિત્ર્યની સહુથી અનેરી ભાત,
તેજસ્વી અને ઓજસ્વી, જે કંઈ પ્રવૃતિ કરે એમાં હંમેશાં યશસ્વી,
અક્ષરધામના દિવ્ય મુક્તની પિછાણ,
ક્યારેય કોઈ પ્રવૃત્તિમાં ન હોય જરાય મનસ્વી !

સમજણની ઉંમરથી જ પ્રભુને થયાં સમર્પિત,
દેહ, ઈન્દ્રિય, અંતઃકરણ કે મનથી થયાં ન વિચલિત,
માતા-પિતાનો ભવ્ય સંસ્કાર વારસો,
બીજાને નિભાવતાં વહી જાય વર્ષો,
તે ભરજુવાનીમાંથી જ જાળવ્યો, વધાર્યો, દિપાવ્યો,
સહુ કોઈ બોલી ઊઠ્યાં, 'આ આત્મા છે સૌથી નોખો,
જાણે પ્રભુનો જ લાડકવાયો !'

'અક્ષરધામરૂપી તખત' તારદેવ સાક્ષાત્ મંદિરે,
તારા અને જ્યોતિ સંગે, આવ્યાં ભગવાન ભજવા ઉમંગે,
રંગાયાં ડાકા-પપ્પા-બા-કાંતિભાઈના પરિવારના રંગે.

બહેનો માટે ભગવાન ભજવાની ક્રાંતિ કરી,
દેવી જોડાઈ સંગે, સુગમતા કરી નવપંથે !

જોગીના આતમ સૂરમાં, નિજ સૂર ઉત્સાહથી પૂરાવ્યો,
'બહેનો ભગવાન ભજે તો શું ખોટું?'
એ વચનને માન્યું અતિ મોટું,
એનો તોલ કરી એને શાશ્વતતાના રંગે ઓપાવ્યો !

ચારેય મળીને સાધનાનો રથ હંકાર્યો, એવો વેગે કે
એ રથને પૈડાંની જગ્યાએ આવી પાંખ,
તારાનો આત્મપ્રકાશ, જ્યોતિનો અતૂટ વિશ્વાસ,
હંસાની અભીપ્સિત આંખ, દેવીની દાસત્વની પ્રજ્ઞા ખાસ.
નિજ વ્યક્તિત્વ મિટાવ્યું, અસ્મિતા ઓગાળી,
જીવતાં જ કરી અસ્તિત્વનાં જાણપણાની રાખ !

ફેલાવ્યો 'ગુણાતીત જ્યોત'નો પ્રકાશ,
યોગીજીનાં વચન-આશિષ,
'ગુણાતીત જ્ઞાનના સંદેશા અહીંથી ફેલાશે !'
એને સાકાર કરી ઝળહળ કર્યું આધ્યાત્મિક જગ આકાશ...

હે વહાલાં દીદીજી,
આપ પપ્પાજીના અનોખા સર્જનમાંથી સર્જક થયાં,
થયાં મશાલમાંથી મશાલચી, સૈનિકમાંથી સેનાપતિ,
બહેનોની ભવ્ય અને દિવ્ય આધ્યાત્મિક ઈમારતનાં સ્થપતિ,
પ્રજ્ઞાર્થમાંથી આશ્ચર્ય, એ આપના જીવનનું તાત્પર્ય,
કેટલાંય પ્રેરણાદાયી ભજનો, સંવાદો, સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમો,
શિબિરો, સમૈયાઓનાં બેનમૂન દર્શનોનાં દ્રષ્ટા અને સૃષ્ટા !

આપ થયાં વ્યક્તિમાંથી વિભાવના,
વિભાવનામાંથી દંતકથા, દંતકથામાંથી આદર્શ,
જે કોઈ જાણે-અજાણે પામે આપનો પાવન સ્પર્શ,
ચારમાંથી થયાં ચારસો, અવિરત વહેતો અને
વધતો રહેશે આ દિવ્ય ગુણાતીત વારસો !

યાવત્ચંદ્રદિવાકરૌ ગૂંજતું રહેશે આપનું નામ અને શાશ્વત ડામ,
ધન્યતા પામી બિરદાવશે આવતી અનેક પેઢીઓ તમામ.
અમેય ધન્યતા પામીએ એવું પ્રાર્થીએ સર્વે,
હે વહાલાં દીદીજી, આપના પ્રેરણા પિયુષપર્વે !

'અક્ષરધામ' મંદિર, પવઈના સંતભાઈઓ, સંતબહેનો તથા
મુક્તસમાજના જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 11 14-01-2026 23:09:34

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Guruhari Pappaji's 110th "Shashvat Sankalp Parva" and P.P. Hansadidi's 90th Pragatya Din - "Prerna Piyush Parva" celebration at Gunatit Jyot on 1st and 2nd November. (2) Annakut celebration at Kharghar on 5th November. (3) Shakotsav at "Akshardham" Temple, Powai on 6th November. (4) Bhajan Sandhya at Danti on 7th November. Also visited Prasadi Places of All Gunatit Swaroops at Ubhrat on 8th November. (5) P.Dr. Veenaben from Gunatit Jyot at "Akshardham" Temple, Powai on 8th November. (6) P.P. Premswaroopswamiji and Saints at "Akshardham" Temple, Powai on 12th November. (7) Saint Brothers and Devotees' visit to meet P.P. Guruji at Delhi on 15th November. (8) Saint Brothers and Sisters visited P.B. Chetnaben Avlani's School at Dombivali on 25th November. (9) P.P. Kantikaka's 40th Smruti Din and P.P. Rajubhai Thakkar's 78th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 27th November. (10) P.P. Ashwinbhai's 75th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 29th November. (11) Article for P.P. Hansadidi on her 90th Pragatya Din - "Prerna Piyush Parva" celebration on 2nd November.

❋ ❋ ❋

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta

Snehal Sindhu Nov 2025-V07.indd 12 14-01-2026 23:09:36